**कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।**

**ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।**

आज हम **विश्वास** के बारे में अध्यन्न करेंगे।

विश्वास वो एक चीज़ है जिसे हर कोई अपने प्रतिदिन की दिनचर्या में किसी न किसी रूप में उसका **अभ्यास** करता है--

➡ ये एक **विश्वास** है कि सूरज अगले दिन उदय होगा!

**तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है**

**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

➡ ये एक **विश्वास** है कि एक महीने काम करने के अन्त में हमें उसकी **तनख्वाह** या **पगार** मिलेगी।

➡ ये भी एक **विश्वास** है कि **बैंक में रखे हुए पैसे** सुरक्षित हैं।

➡ फिर एक **विश्वास** और भी है जो **धार्मिक** हैं और यह विभिन्न प्रकार का है--

☞ एक **हिन्दू** अपना **विश्वास** अनेक मूर्तियों पर, पूजा पाठ तथा रीतिरिवाजों पर रखता है।

उसका ये विश्वास भी है कि **गाय** एक पवित्र प्राणी है और उसका मूत्र (गौमूत्र) पवित्र है।

➡ ये उसका विश्वास है!

☞ एक **मुसलमान** अपना एक **विश्वास** रखता है। उसका ये विश्वास है कि अगर वो पानी और एक प्रकार के मीठी सुगन्ध वाली धूप के **चूर्ण** को पानी में मिलाकर नहाएगा तो वो दुष्टात्माओं या अशुद्ध आत्माओं से सुरक्षित रहेगा।

➡ ये उसका विश्वास है!

☞ **बौध धर्म** पालन करने वाले का विश्वास पुर्नजन्म, अवतार और आत्मा का **निर्वान** के लिए जन्म और मृत्यु के चक्र पर है। **(पुर्नजन्म से बच निकलने का उपाय)**

➡ ये उसका विश्वास है!

☞ एक **रोमन कैथोलिक** "वेलांकनी" **चर्च जो कि दक्षिण भारत में है**, वहां जाकर माता मरियम की आराधना और प्रार्थना करता है और वहां से जयमाला, पवित्रपानी, रोजरी आदि इस विश्वास से खरीदता है कि उसकी प्रार्थना सफल होगी और उसकी सब परेशानियों और समस्याओं का हल होगा।

➡ ये उसका विश्वास है!

☞ **पेंटिकस्टॉल** ईसाई अपना विश्वास सामूहिक अन्य भाषा और चमत्कार पर रखते हैं तथा अपना ध्यान अधिकतर पवित्र आत्मा की महिमा करने पर रखते हैं।

➡ ये उसका विश्वास है!

**तो ये सब जगत में पालन करनेवाले अनेक प्रकार के विश्वासों का उदहारण है!**



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

अब हम इस प्रश्न पर आते हैं -

☞ **विश्वास का ठीक-ठीक अर्थ क्या है?**

हम इसे कैसे **परिभाषित** करते हैं?

आइए हम इसका उत्तर बाईबल में देखें, जैसा की हम एक वचन में पढ़ते हैं -

इब्रानियों 11:1 "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है"

जी हाँ! विश्वास एक दृढ भरोसा या दृढ निश्चय है अनदेखी चीज़ों पर।

**उदाहरण:** परमेश्वर ।

**विश्वास** को तीन प्रकार में विभाजित करने के लिए कहा जा सकता है -

☞ 1. **बचानेवाला विश्वास** ➪ यह विश्वास वर्तमान पीड़ा और मृत्यु की स्थिति से **मुक्ति** का है। सभी धर्मों में मोक्ष की योजना है।

बाईबल में

यहून्ना 3:16 "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए"

☞ 2. **दिन प्रतिदिन का विश्वास** ➪ यह वो विश्वास है जिसका अभ्यास **दैनिक** ईश्वरीय प्रबन्धों, सुरक्षा और मार्ग दर्शन के लिए किया जाता है।

बाईबल में

मत्ती 6:11 "हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे"

☞ 3. **सिद्धान्तिक या उपदेशों पर आधारित विश्वास** ➪ यह वो विश्वास है जो शिक्षाओं या **उपदेशों** पर **आधारित** है। उपदेशों पर आधारित यह विश्वास विभिन्न धर्म के बीच और कई और विभिन्न ईसाई सम्प्रदायों के बीच में भी अलग-अलग होता है।



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

**इस तीन प्रकार के विश्वास का अभ्यास सब लोगों के द्वारा प्रतिदिन किसी न किसी रूप में किया जाता है।**

अब यह हमें एक और बहुत **अलग** विश्वास पर लेकर आता है!

इसका उल्लेख बाईबल में किया गया है!

आइए हम इस विश्वास को देखें जिसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं --

यहूदा 20 "पर हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए"

जी हाँ! इसे-- **"अती पवित्र विश्वास"** कहा जाता है!

क्या आपने पहले कभी इस विश्वास के बारे में सुना है?

यह **"अती पवित्र विश्वास"** क्या है?

**"उन्नति करते हुए"** का अर्थ क्या है?

आइये फिर से हम देखें और एक वचन में इस विश्वास के बारे में पढ़ें -

यहूदा 3 "...मैं ने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था"

जी हाँ! यह **"अती पवित्र विश्वास"**, "पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था" प्रभु यीशु मसीह के द्वारा -- जो की परमेश्वर के पुत्र हैं,

और यह क्या था, जिसे "पुत्र" अपने साथ लेकर आया था?

हम एक वचन में पढ़ते हैं -

यहून्ना 1:17 "इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची"

जी हाँ! यहाँ अती पवित्र विश्वास -- **"अनुग्रह और सच्चाई"** को सूचित करता है।

यीशु के द्वारा आया हुआ **"अनुग्रह और सच्चाई"** क्या है?

**तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है**

आइये इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ें --

इब्रानियों 1:2 "इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की..."

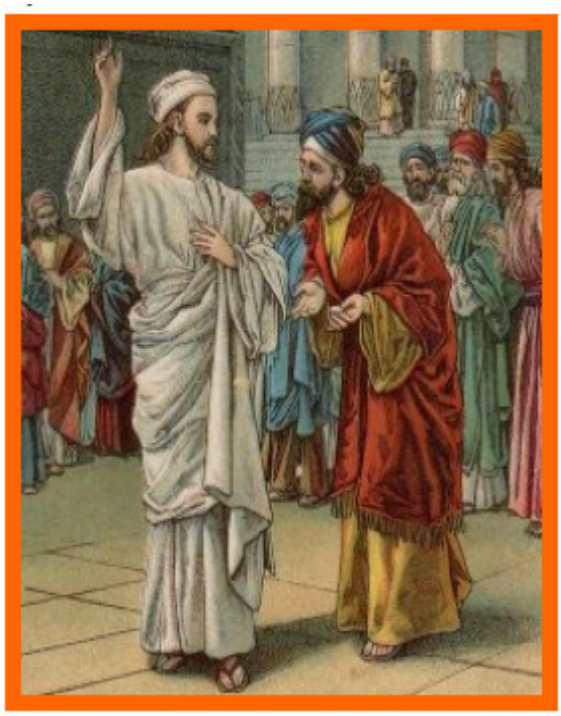

जी हाँ! यह **"अनुग्रह और सच्चाई" परमेश्वर के वचन** हैं!!

यीशु ने परमेश्वर के वचन **बोले** हैं, जिसके बारे में हम बहुत स्पष्टता से इस वचन में पढ़ते हैं --

यहून्ना 3:34 "क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है..."

जी हाँ! यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यीशु परमेश्वर के वचन कहते थे।!

अब हम परमेश्वर के वचन के बारे में क्या पढ़ते हैं?...

यहून्ना 17:17 "...तेरा वचन सत्य है"

जी हाँ! परमेश्वर के वचन **सत्य** हैं और यीशु के द्वारा इन **सत्य** वचनों को उनके चेलों के साथ बाँटा गया था और **सत्य** के इन वचनों के ऊपर एक **विश्वास** बनाया गया था, जिसे **अति पवित्र विश्वास** कहते हैं।

**तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है**

**इस प्रकार से "अति पवित्र विश्वास" एक ऐसा विश्वास है जो परमेश्वर के सत्य वचनों पर आधारित है -- जो कि पूरी बाईबल में दर्ज किये गए हैं।**

➡ इस संसार में कितने लोग हैं जो **सत्य** की **खोज** करते हैं?!

➡ हमारे चारों और हम सत्य के लिए किए जा रहे विभिन्न **दावों** को देखते हैं। लेकिन इन सभी दावों के बीच में हम परमेश्वर के **वचनों** की एक **धीमी** सी आवाज़ सुनते हैं जो सरलता से हमें बताती है कि - "**यह (परमेश्वर के वचन) सत्य हैं**"।

☞ **क्या आप इस पर भरोसा करते हो?**

☞ क्या आप मानते हो की बाईबल सत्य है?

आज बहुत लोगों को बाईबल पर **पूरा विश्वास** या पूरा भरोसा नहीं है। और तो और ईसाइयों में **अधिकतर** लोगों को बाईबल में रहनेवाली **पुस्तकों** के नाम का मालूम नहीं है, और बाईबल को समझना तो दूर की बात है!

(उदाहरण: **एस्तर/एज्रा/तीतुस आदि**। बहुत से लोग इस बात से अनजान हैं कि ये नाम बाईबल की पुस्तकों के हैं और उन्हें कोई अन्दाजा नहीं है की ये पुस्तकें **पुराने नियम** में है या **नए नियम** में।)

हम में से उनके लिए जिनका यह **दृढ़ भरोसा** है कि परमेश्वर के वचनों से **ही** बाईबल बनी है, आइये हम देखें की परमेश्वर ने अपने **इन** वचनों को कैसे प्रगट किया है - इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं -

इब्रानियों 1:1,2 "पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति--भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की..."

**जी हाँ! इसी तरह से उन्होंने अपने वचनों को प्रगट किया।**

यहाँ पर इस वचन का इशारे वाली भाषा में यह मतलब है --

☞ "पूर्व युग" ⇨ इसे **पुराने नियम** की अवधी के सन्दर्भ में लिखा गया है।

**तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है**

"थोड़ा थोड़ा करके" ⇨ इसका मतलब है **पुराने नियम** के लिए लगे **1600 वर्षों** की अवधि।

"भांति–भांति" ⇨ इसका सम्बन्ध भविष्यद्वाणियों, चिन्हों और छायों से है जिन्हें **स्वर्गदूतों** और **भविष्यद्वक्ताओं** के मुख से लिखा गया।

"इन अन्तिम दिनों" ⇨ इसका सम्बन्ध **नए नियम** से हैं जिसमे **100 वर्षों** की अवधि लगी और इसे यहूदियों के युग के "अन्तिम दिनों" में लिखा गया।

"पुत्र के द्वारा" ⇨ इसका सम्बन्ध यीशु के वचनों से हैं जो कि 12 प्रेरितों पर प्रगट हुए और उनके द्वारा बाईबल में दर्ज किए गए हैं।

**परमेश्वर के वचन दो भाग में बाँटे गए हैं--**

**पुराना नियम ⇨ 39 किताबें**

**नया नियम ⇨ 27 किताबें**

**कुलमिलाकर ⇨ 66 किताबें**

इस प्रकार परमेश्वर के 66 किताबों से हमें **"सत्य"** मिलता है।

**ये 66 किताबें परमेश्वर के सत्य को पूरा व्यक्त करती है।**
**जो उत्पति से आरम्भ होकर प्रकाशितवाक्य में समाप्त होती है।**

और इसकी पुष्टि इस वचन में की गई है -

प्रकाशितवाक्य 22:18,19 "...यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को, जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा"

परमेश्वर का ये स्पष्ट आदेश है कि परमेश्वर के वचनों में से कुछ भी **बढ़ाया** या **घटाया** न जाये, ये उनकी चेतावनी है।



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

बाईबल में 66 किताबों के अलावा कोई अतिरिक्त किताबें नहीं है लेकिन कुछ इसाई 66 से ज्यादा किताबें होने का दावा करते हैं!

इसके बाद हम इसके बारे में फिर से एक वचन में पढ़ते हैं–

व्यवस्थाविवरण 12:32 "...और न तो कुछ उनमें बढ़ाना और न उनमें से कुछ घटाना..."

परमेश्वर के वचनों के बारे में एक और स्पष्ट आदेश हम इस वचन में देखते हैं कि हमे परमेश्वर के वचनों में **ना** कुछ **"जोड़ना"** है और **ना** कुछ **"घटाना"** है।

और इसी बात को हम फिर से एक और वचन में पढ़ते हैं -

नीतिवचन 30:6 "उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा, ऐसा न हो कि वह तुझे डांटे और तू झूठा ठहरे"

**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

इस वचन में हम परमेश्वर की ओर से एक और **बड़ी चेतावनी** उनके लिए देखते हैं जो परमेश्वर के वचनों में अपने मन से **जोड़ते हैं**।

यह **बहुत स्पष्ट** लगता है कि परमेश्वर इस बारे में अत्यन्त सख्त हैं कि उनके वचनों में ना कुछ जोड़ा जाये और ना ही उनके वचनों में से कुछ निकाला जाये और इस प्रकार से उनके वचनों की **शुद्धता** को बनाये रखना है।

इसलिए **प्रेरित पौलुस** की पत्री **में** उनके बारे में हम पढ़ते हैं --

प्रेरितों 20:27 "क्योंकि मैं परमेश्वर के सारे अभिप्राय को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका"

इस तरह प्रेरित पौलुस यहाँ पर परमेश्वर के "**सारे** अभिप्राय को बताने के बारे में कह रहे हैं"।

जी हाँ! परमेश्वर के वचनों में से चुन-चुन कर केवल मनुष्यों को खुश करने के लिए बातें **नहीं** करनी चाहिए बल्कि अवश्य यह **ध्यान** रखना चाहिए की **परमेश्वर ही प्रसन्न हों!**
इसलिए परमेश्वर की इन **सख्त** आज्ञाओं को देखकर हम यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि -

**क्या हमारे पास आज जो बाईबल है वो वचनों में "कुछ बढ़ाए जाने या वचनों में से कुछ निकाले जाने" से वंचित हैं?**

इस प्रश्न का **चौका** देनेवाला **उत्तर** है -**नहीं!!**

पवित्रशास्त्र बाईबल में **दो** ऐसे अंश हैं जिन्हें बाईबल के **NIV** अनुवाद में **अप्रमाणिक या नकली** साबित किया गया है।

आज के समय में जो बाईबल उपलब्ध है, उसका अनुवाद **"हस्तलेखों"** से किया गया है।

ये **"हस्तलेख"** क्या है?

छापने की मशीन का आविष्कार होने से पहले, बाईबल को बकरे या गाय की चमड़ी पर **लिखा** जाता था। इन हस्तलेखों को कुण्डलित लेख (scroll) भी कहते हैं जिन्हें दोनो सिरों से गोल-गोल घुमाकर संग्रह करके रखा जाता था।



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

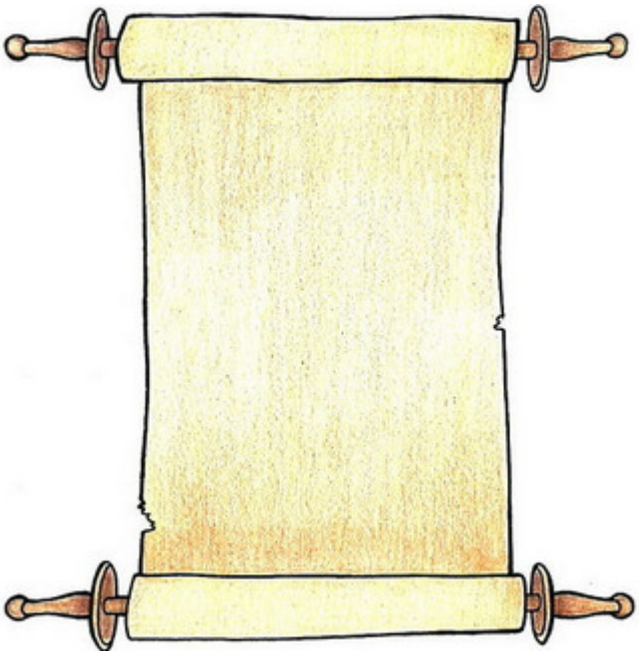

इन **कुण्डलित हस्तलेखों** का लगातार उपयोग करने से हाथ से लिखे हुए विषय 50-60 वर्षों में उड़ जाते थे या धुंधले पड़ जाते थे।

इसलिए पूरी बाईबल को **फिर से** दूसरे चमड़े या कुण्डलित लेखों पर **लिखने** की जरुरत पड़ती थी।

**क्या परिश्रम था! बस कल्पना करें!**

इस प्रकार 1400 वर्षों की अवधि में बाईबल **<u>कई बार लिखी गई और कई बार फिर से भी लिखी गई।</u>**

इन हस्तलिखित प्रतियों को "पाण्डुलिपि" या **"हस्तलेख"** कहते हैं जिन्हें संक्षेप में **एम. एस. एस.** भी कहा जाता है।

**उदाहरण:** सीरिया के हस्तलेख [एम. एस. एस.]; वैटिकन के हस्तलेख [एम. एस. एस.] आदि।

अभी के समय में जो **मान्यताप्राप्त किंग्स जेम्स संस्करण** अंग्रेजी में उपलब्ध है, इसे **1611** में छापा गया था और इसका अनुवाद 16 वीं सदी के "हस्तलेखों" से हुआ था (लगभग 100 वर्षों पहले) ।



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

फिर 1940 के दशक में मृत सागर के पास **कुमरान गुफाओं** में जो नमक से भरी हुई है, **दूसरी और तीसरी सदी** की अवधि में लिखे गए कुण्डलित हस्तलेख पाये गए थे।

**इन्हें अदभुत रीती से 1500 से भी अधिक वर्षों तक के लिए नमक में संरक्षित किया गया था!!**

**कुमरान की गुफाओं मृत सागर के पास**

इन्हीं कुण्डलित हस्तलेखों से अंग्रेजी की **नई अन्तराष्ट्रीय संस्करण [एन.आई.वी.]** बाईबल का अनुवाद किया गया है।

इस अनुवाद के माध्यम से यह पाया गया कि बाद में बाईबल में कई चन्द और वचनों को जोड़ा गया था। इन्हें **Interpolations या प्रक्षेप** कहते हैं जिसका मतलब है ऐसे वचनों को बाईबल में जोड़ना जो कि प्राचीन हस्तलेखों में नहीं पाए गए हों!

बाईबल में **दो** सबसे बड़े पद या वाक्यांश जो कि नकली हैं या ऊपर से **जोड़े** गए हैं, वो हैं --

1. **मरकुस 16: 9-20**

और 2. **यहून्ना 7:53 -- 8:11**

**तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है**

**अंग्रेजी के [एन.आई.वी.] बाईबल के पन्ने के नीचे दिया गया टिप्पणी या फुटनोट, जो ये वचनों (वाक्यांशों या पदों) के लिए दिए गए हैं, इन तथ्यों की गवाही देता है।**

इस तरह विभिन्न भाषाओँ में के अनुवादों की तुलना के द्वारा परमेश्वर के वचनों का अध्यन्न बहुत सावधानी से करना चाहिए।

गम्भीरता से बाईबल का अध्यन्न करने के लिए आवश्यक दो बहुत ही जरुरी बाईबल के अनुवाद हैं -

1. अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन (KJV) (यह **सबसे** पुराना अनुवाद है)
2. अंग्रेजी का नया अन्तराष्ट्रीय संस्करण (NIV) (सबसे **नया** अनुवाद) ।

परमेश्वर के वचनों की सटीक समझ बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वह "विश्वास" जो **परमेश्वर से प्रकाशित और लिखित वचनों पर आधारित है, उसी को**

**अति पवित्र विश्वास कहते हैं।**

प्रथम कलीसिया में, उनके लिए यह बहुत महत्वपूर्ण था कि वे **जिस पर विश्वास करें**, वो पवित्र-शास्त्र बाईबल के वचनों में लिखा हुआ हो।

इसलिए हम बिरिया नगर के लोगों के बारे में यह पढ़ते हैं -

प्रेरितों 17:11 “ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें योंही हैं, कि नहीं”

जी हाँ! बिरिया के लोग हर एक वचन को जो वे सुनते थे, पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ते रहते थे कि ये बातें यों हीं है कि नहीं -- **यहाँ तक कि प्रेरित पौलुस की भी बातों को**!

प्रेरित पौलुस ने उन्हें **"ज्यादा भले"** (मतलब अधिक श्रेष्ठ) कहकर बुलाया था!! हमें भी इन बिरियावासियों की तरह होना चाहिए तभी हमारे पास भी **अति पवित्र विश्वास** होगा और हम परमेश्वर को भायेंगे।

हमारे पास किस तरह का **विश्वास** है?

**तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है**

क्या ये सिर्फ विश्वास है या -- **"अति पवित्र विश्वास"** है?

**क्या इस प्रश्न का उत्तर देना महत्वपूर्ण है?**

**जी हाँ!** यह महत्वपूर्ण है!

क्योंकि हम परमेश्वर के वचनों के बारे में यह पढ़ते हैं कि

"तेरा वचन सत्य है"

और वह विश्वास जो परमेश्वर के वचनों पर आधारित **न** हो, वह **असत्य** है या परमेश्वर की और से **नहीं** है और इसके सन्दर्भ में बाईबल में यह लिखा गया है -

1 तिमुथियुस 4:1 "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे"

जी हाँ! जो **विश्वास** बाईबल के वचनों पर आधारित **नहीं** है, वो शैतान से है जिसके बारे में हम पढ़ते हैं -

यहून्ना 8:44 "... वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है"

इसलिए यह जांचना **अत्यन्त** महत्वपूर्ण है कि हम क्या मानते हैं?

क्या हमारे पास **"अति पवित्र विश्वास"** है या केवल **"विश्वास"** है?

**निम्नलिखित उपदेशों के बारे में हमारा विश्वास क्या है ...**

1. **मनुष्य की आत्मा** और उसके उपदेश --क्या आत्मा अमर है? क्या यह मर सकती है? आत्मा क्या है? क्या सभी धर्मों में आत्मा के बारे में जो सिखाया जाता है, वह बाईबल में भी पाया जाता है?



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

2. **नरख** क्या है? क्या हिन्दुओं का यमलोक और बाईबल का नरख (अधोलोक) एक ही है? क्या आप नरख में मर सकते हैं? नरख या अधोलोक की सच्चाई क्या है?

3. **त्रिदेव** और तीन ईश्वरों का एक ही होने का "रहस्य" क्या है --इसे कैसे समझा जाता है? क्या परमेश्वर एक "दिव्य रहस्य" हैं? क्या कोई परमेश्वर के बारे में कभी नहीं समझ सकता?

4. **मसीह विरोधी और 666 अंक** --यह मसीह विरोधी कौन है? क्या वो एक व्यक्ति है?

5. **बाईबल कालकर्म** और आदम की उत्पत्ति से लेकर अभी तक के समय का अध्यन्न।

कितने वर्षों से मनुष्य पृथ्वी पर रह रहा है?

क्या यह लाखों वर्षों का समय है, जैसा कि वैज्ञानिकों के द्वारा सिखाया जाता है?

6. **विरोधी शैतान** -- क्या यह कुरूप है? क्या वह अमर है? क्या वह मर सकता है? उसकी शक्ति लगभग क्या है?

7. **हमारे प्रभु का दूसरा आगमन**। क्या कोई कभी भी जान पाएगा कि प्रभु कब आयेंगे?

8. **चर्च** और उसके बहुत से सम्प्रदाय -- कैसे? क्या सब मिलकर यीशु मसीह की कलीसिया हैं? इनमें कोई भी एकता क्यों नहीं है, जैसा कि हम **इफिसियों 4:3-6** वचनों में देखते हैं - "**एक** ही देह है", **एक** ही बपतिस्मा, "अपने बुलाए जाने से **एक** ही आशा"?

9. **परमेश्वर का राज्य** क्या है और उसका मतलब क्या है? क्या यह असली है? क्या यह राज्य पृथ्वी पर स्थापित होगा? या फिर क्या वे **केवल** स्वर्ग में है?

... और भी ऐसे ही कई और विषय!!



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

क्या इस **सब** उपदेशों के बारे में हमारा **विश्वास** परमेश्वर के वचनों पर आधारित है? यदि आपका उत्तर -- "हाँ" है --क्या आपको पक्का यकीन है? हमें निश्चित होना चाहिए!

**क्या हमारा विश्वास बस एक "विश्वास" है... या यह एक "अति पवित्र विश्वास" है?**

क्योंकि ये लिखा है -

यहूदा 1:20 "तुम अपने अति पवित्र विश्वास में उन्नति करते हुए..."

इस वचन का सन्दर्भ परमेश्वर के वचनों के **ज्ञान** और विश्वास में **धीरे-धीरे और स्थिरता** से होनेवाली उन्नति से है -- **"...सत्य"**

जी हाँ! बाईबल का अध्यन्न और उसका ज्ञान प्राप्त करना **एक धीमी और निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है**।

यही है "उन्नति करते हुए" का मतलब!!

क्योंकि प्रभु ने भी हमें यहून्ना 8:32 वचन में भरोसा दिया है कि -

यहून्ना 8:32 "तुम सत्य (वचन) को जानोगे और सत्य (वचन) तुम्हें स्वतन्त्र करेगा"

जी हाँ! **सत्य वचन** हमें **गलतियों, अन्धविश्वासों और झुठे उपदेशों (दार्शनिक चिंतन/ भाषण)** से स्वतन्त्र करेगा जो कि सब जगह है और लोगों को फन्दे में लेकर धोखा देने की खोज में रहता है।

क्योंकि हम परमेश्वर के वचनों और इसके ज्ञान और इसकी आशीषों के बारे में इस वचन में पढ़ते हैं -

2 तिमुथियुस 3:16,17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए"

जी हाँ! पवित्रशास्त्र का ज्ञान और अध्यन्न इनके लिए लाभदायक होगा -

"उपदेश" -- बाईबल में जैसे सिखाया है और जो भी सिखाया गया है उन सभी उपदेशों के बारे में **सच्चाई** को जानने में।



**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

"समझाने" -- **गलत विश्वासों** पर **रोशनी** डालने और शिक्षाओं और उपदेशों की **गलतियों** को पहचानने में।

"सुधारने" --**सच्ची शिक्षाओं** और **उपदेशों** को दिखाने में जो कि **सत्य** के अनुसार है।

"धर्म की शिक्षा" --जीवन और उससे जुड़ी सभी चीज़ों में परमेश्वर को ग्रहणयोग्य **तौर-तरीकों** को सिखाने का सिद्ध सलाहकार!

**इन सब बातों को समझने के बाद हमें आश्चर्य होगा कि --आज बाईबल का ज्ञान और अति पवित्र विश्वास ज्यादातर इसाईयों के बीच में बहुत कमजोर क्यों है?**

इसका उत्तर हम अगली कक्षा में पायेंगे जब हम विश्वास के दूसरे भाग को पढ़ेंगे! अन्ततः, एक सवाल? - क्या करना आपको अधिक महत्वपूर्ण लगता है -

बाईबल का अध्यन्न या प्रार्थना?


**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**thekingdomgospel2874@gmail.com**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**

आइये उसका उत्तर हम बाईबल में देखें -

यहूदा 1:20 "पर हे प्रियों, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए,"

देखा! **<u>प्रथम</u>** महत्व बाईबल के ज्ञान में **<u>उन्नति</u>** करने को दिया गया है, बाईबल के अध्यन्न के द्वारा और **<u>उसके बाद</u>** प्रार्थना को महत्व दिया गया है।

☞ तब क्यों आज इस सही क्रम को उलट दिया गया है?

☞ क्यों इसाई लोग बाईबल के अध्यन्न पर ज्यादा महत्व नहीं देते हैं?

हम अगले पाठ में इसका उत्तर सुनने के लिए फिर से मिलेंगे!

--आमीन-

**For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:**
**<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>**
**E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com**